ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययन : इटावा जनपद के महाविद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में

विषय पर

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान

में

मास्टर ऑफ फिलोस्फी

की

उपाधि हेतु

शोध प्रबंध

शोधार्थी

प्रीती

नामांकन संख्या– 1367 / 16

शोध पर्यवेक्षक

प्रो0 शिल्पी वर्मा

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY

LUCKNOW

प्रज्ञा शील करुणा

ESTABLISHED 1996

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

(सूचना विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विद्यापीठ)

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ।

(2018)

प्रथम अध्याय : परिचय (Introduction)

1.1 प्रस्तावना (Preface)

भारत एक विकासशील देश है। विश्व में भारत एक ऐसे विकासशील देशों में गिना जाता है, जो तेजी से विश्वपटल पर उभर रहे हैं। भारत के विकास में शहर के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र का भी महत्वपूर्ण योगदान है। कृषि में किसान नई नई तकनीकी का उपयोग करने लगे हैं। शिक्षा का स्तर भी ऊंचा हुआ है। राष्ट्र की आधी आबादी अर्थात महिलाओं ने भी कड़ी मेहनत की है, इस देश के विकास में। महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इसमें राजनीति, अर्थव्यवस्था, अकादमिक, शिक्षा, सेवाक्षेत्र, तकनीकी, उद्योग आदि शामिल है। भारत में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की जनसंख्या कम है। इसी के साथ पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में साक्षरता दर भी कम है। भारतीय समाज में पहले के समय में महिलाओं को पढ़ाया नहीं जाता था। सावित्रीबाई फुले ने अथक प्रयासों से महिलाओं को पढ़ाया और समाज के विरोध में काम किया, और समाज को बताया कि किस प्रकार से महिलाओं की भागीदारी समाज के लिए जरूरी है।

विभिन्न सरकारों ने कन्याओं के लिए अलग से विद्यालय और महाविद्यालयों का निर्माण किया ताकि वे बेझिझक पढ़ सके। उनके रहने की व्यक्तिगत व्यवस्था भी की जाने लगी, ताकि परिवार भी अपने बेटियों को स्कूल अथवा कॉलेज भेजने में सहज महसूस कर सकें। इस तरह का निर्णय काफी लाभप्रद रहा। छात्राओं की संख्या विद्यालयों और महाविद्यालयों में बढ़ने लगी। इसके अलावा लड़के के बाराबर लड़की को मानने और लड़कियों को कम न आंकने के कई योजनाओं का संचालन किया गया और लोगों को जागरूक किया गया।

उच्च शिक्षा में भी सुधार करते हुए सरकारी या गैर सरकारी विश्वविद्यालय या निजी कॉलेज में पुस्तकालय को डिजीटल बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। सूचना क्रांति ने देश को सूचना पहुंचाने का काम ही आसान नहीं किया गया बल्कि पुस्तकालय के लिए नया नजरिया प्रस्तुत किया है। पहले जहां पुस्तकालय भौतिक रूप बड़ा होता था, वो आज डिजीटल होने के चलते थोड़ी सी जगह में संचालित हो जाता है। जैसे एक कम्प्यूटर में ही हजारों पुस्तकों की 'ई' कॉपी संग्रहित की जा सकती है। ऐसे में डिजीटल लाइब्रेरी एक

छोटे से कमरे में भी चल सकती है। इटावा में भी सरकारी, गैर सरकारी महाविद्यालय संचालित हैं। इतना ही नहीं शहर में कॉचिंग सेंटर भी संचालित किए जा रहे हैं। अब हर जगह पुस्तकालय बन रहे हैं। छात्राएं इसका लाभ ले रही हैं। शिक्षा और पुस्तकालय के योगदान को भी नहीं भूलना चाहिए। 1993 में वियना में मानवाधिकार पर विश्व सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिसमें मजबूती से कहा गया कि महिलाओं के अधिकार मानवाधिकार ही हैं। इसी तरह 1994 में कैरो में जनसंख्या एवं विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में महिलाओं के स्वास्थ्य और प्रसूति स्वास्थ्य को उपयुक्त विकास के लिए महत्वपूर्ण माना।

1.2 पुस्तकालयः एक परिचय

पुस्तकलय का अर्थ है पुस्तकों का स्थान या घर है, जहां पर पुस्तकों को संग्रहित कर रखा जाता है। पुस्तकालय दो शब्दों से मिलकर बना है– **पुस्तक+आलय**। इसमें **'आलय'** का अर्थ किसी स्थान या घर से है। (Library) पुस्तकालय का अंग्रेजी शब्द है लाइब्रेरी है जो कि लेटिन भाषा के **'लाइबर'** शब्द से बना है, जहां पर अनेक प्रकार की पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं, मानचित्र, हस्थलिखित ग्रन्थ, आदि सब संग्रहित होते हैं।

1.3 अध्ययन की समस्या (Problem of the Study)

उत्तर प्रदेश के इटावा जनपद में ग्रामीण क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है, जिसमें 86.0 प्रतिशत पुरूष हैं और 67.2 प्रतिशत महिलाएं हैं। यहां पुरूष और महिला के बीच साक्षरता दर में 18.8 प्रतिशत का अंतर है। जब महिला साक्षरता दर में भारी अंतर है। जनपद में कुल, ग्रामीण, शहरी साक्षरता दर क्रमशः 69.6, 67.2, 77.2 है। ग्रामीण (67.2) और शहर (77.2) में महिला साक्षरता दर में 10 प्रतिशत का भारी अंतर दिखाई देता है, जो शोध छात्रा को ग्रामीण छात्राओं पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित करता है।

1.4 समस्या कथन (Statement of the Study)

लघु शोध छात्रा ने अपनी समस्या को कथनबद्ध किया है जो इस प्रकार है– **''ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययन''**

1.5 अध्ययन में प्रयुक्त मुख्य शब्द (Keyword)

शोध छात्रा ने अध्ययन में कुछ महत्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया है जो अध्ययन में मुख्यशब्द हैं। शब्द इस प्रकार हैं– **ग्रामीण छात्रा, ग्रामीण क्षेत्र, महाविद्यालय, पुस्तकालय**

1.6 अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study)

शोध छात्रा द्वारा निर्धारित किए गए अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय से एकत्रित किए जाने वाली शैक्षिक सामग्री का अध्ययन।
2. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय उपयोग करने वाले समय का पता लगाना।
3. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालयों में कुल समय व्यतीत करने का अध्ययन।
4. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय तक पहुंचने वाले यातायात संसाधनों का अध्ययन।

1.7 अध्ययन की परिकल्पनाएं (Hypotheses of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1. ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली छात्राओं के शैक्षिक विकास में पुस्तकालय की भूमिका है।
2- पुस्तकालय, छात्राओं की अकादमिक शिक्षा को प्रभावित कर रहा है।
3- ग्रामीण स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं पर पुस्तकालय का समान प्रभाव पड़ रहा है।

1.8 अध्ययन की सीमाएं (Limitation of Study)

अध्ययन की सीमाएं भी निर्धारित की गईं हैं। प्रस्तुत अध्ययन इटावा जिले तक ही सीमित है। अध्ययन सिर्फ इटावा जिले में रह रही ग्रामीण छात्राओं तक ही सीमित हैं। अध्ययन में सिर्फ उन्हीं महाविद्यालयों को ही शामिल किया गया, जहां स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित है। अध्ययन में सिर्फ 5 महाविद्यालयों को शामिल किया गया है। अध्ययन में विभिन्न महाविद्यालयों में पढ़ने वाली 200 छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें 100 स्नातक एवं 100 स्नातकोत्तर की छात्राएं शामिल हैं। अध्ययन में सिर्फ उन छात्राओं को शामिल किया गया जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं और साथ ही पुस्तकालय का

उपयोग करती हैं। अध्ययन मे सिर्फ उन महाविद्यालयों को शामिल किया गया, जोकि छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध हैं और इटावा जनपद के अंतर्गत आते हैं।

1.9 अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study)

इटावा का संक्षिप्त परिचय :– अध्ययन क्षेत्र इटावा है। यह उत्तर प्रदेश का एक जिला (जनपद) है। 2011 की जनगणना के अनुसार इटावा की जनसंख्या 15,81,810 है, जिसमें पुरूष 845856 है तथा महिलाओं की संख्या 7,35,954 है। जनपद की कुल साक्षरता दर 78.41 है। इसमें पुरूषों की 86.06 है तथा महिलाओं की 69.61 है। शोधछात्रा ने अपने अध्ययन में कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों का चयन किया है।

निवास क्षेत्र :– 2011 कें आंकड़ों के अनुसार जनपद में कुल 692 गांव हैं, जिनमें 275627 परिवार निवास करते हैं। ग्रामीण जनसंख्या पर ध्यान दें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या 1215511 है। ग्रामीण क्षेत्र में 76.8 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, शहरों में 23.16 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है।

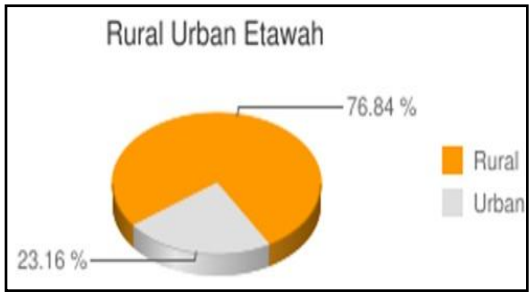

लिंगानुपात :– जनपद में लिंगानुपात 870 है। इटावा में ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात मात्र 862 है। उत्तर प्रदेश में इसका 60वां स्थान है।

शिक्षा :– शिक्षा के मामले में इटावा का उत्तर प्रदेश में चौथा स्थान है। इटावा में ग्रामीण क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है, जिसमें 86.0 प्रतिशत पुरूष हैं और 67.2 प्रतिशत महिलाएं। यहां पुरूष–महिला के बीच साक्षरता दर में 18.8 प्रतिशत का अंतर है।

भाषा :– इटावा शहर में सर्वाधिक प्रचलित भाषा हिन्दी है। इसके साथ उर्दू भी बोली जाती है। यहां ब्रजबोली का उपयोग अधिक किया जाता है।

1.10 शोध विधि एवं प्रकृति (Method and Nature of Study)

शोध छात्रा का अध्ययन मौलिक शोध (Fundamental Research) पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक विधि अपनाकर तर्कों के आधार पर समस्या के समाधान के लिए निगमन विधि (Deductive Method) को अपनाया गया है।

1.11 अध्ययन का समग्र (Population of Study)

इटावा जनपद में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध महाविद्यालयों में पढ़ने वाली कुल ग्रामीण छात्राएं अध्ययन का समग्र हैं। इटावा जनपद में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध कुल 65 महाविद्यालय संचालित हैं, जिसमें लगभग 52000 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत हैं। इनमें ग्रामीण छात्राओं की संख्या निर्धारित करना मुश्किल है।

1.12 न्यादर्श एवं निदर्शन विधि (Sampling)

1.12.1 न्यादर्श : प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा द्वारा महाविद्यालयों का चयन करने के लिए सम्भाव्यता निदर्शन में का चयन किया गया, जबकि चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं के चयन के लिए असम्भाव्यता निदर्शन का चयन किया गया।

1.12.2 निदर्शन विधि (Sampling Method) : शोध छात्रा ने सर्वप्रथम लॉटरी विधि द्वारा समग्र महाविद्यालयों में से 5 महाविद्यालयों का चयन किया गया। चयनित महाविद्यालयों में से प्रत्येक महाविद्यालय से 20 स्नातक की एवं 20 स्नातकोत्तर की, कुल 40 ग्रामीण छात्राओं से प्रश्नावली भरवाई गई। कुल पांच महाविद्यालयों से 200 न्यादर्शों का चयन कर उनसे प्रश्नावली भरवाई गई।

1.13 ध्ययन में प्रयुक्त उपकरण (Tools)

शोध छात्रा द्वारा दो उपकरणों का उपयोग किया गया।

1– **प्रश्नावली।** **2– साक्षात्कार**

1.14 आंकड़ों का संकलन (Data Collection)

प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा द्वारा **प्राथमिक आंकड़ों** का संकलन किया गया। आंकड़ों का संकलन करने के लिए शोध छात्रा स्वयं संलग्न रही।

1.14.1 प्रश्नावली : प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा ने स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर प्रश्नावली भरवाई। प्रश्नावली में कुल 25 प्रश्न शामिल किए गए।

द्वितीय अध्यायः साहित्यिक समीक्षा (Literature Review)

2.1 प्रस्तावना : प्रस्तुत अध्ययन की समस्या से संबंधित शोध छात्रा ने भी अध्ययन किया और समस्या के समाधान से संबंधित जानकारियों को इक्ट्ठा किया।

2.2 ग्रामीण विकास एवं साक्षारता अभियान : 1999 में शोधार्थी के0पी0 सरस्वती नायडू ने ''ग्रामीण विकास एवं साक्षरता अभियान में पुस्तकालय की भूमिका'' विषय पर जे0एल0 सायनी के पर्यवेक्षण में अध्ययन को गुरू घासीदास विश्वविद्यालय से पूर्ण किया।

2.3 केरल का ब्रिटिश पुस्तकालय : शोधार्थी टी0के0 सुब्रामोनी ने 2005 में "Impact of the British Library Thiruvananthapuram on the socio economic and educational development of the users" विषय पर मनोरमा श्रीनाथ के पर्यवेक्षण में अध्ययन किया। अध्ययन गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान से किया गया।

2.4 अनंतपुर में ग्रामीण राजकीय पुस्तकालय : 1993 के एक अध्ययन ''Rural public libraries in Anantapur district a study of library materials services and user practices'' कृष्णा देवराय विश्वविद्यालय के शोधार्थी पी.एस. सोम्याजुलु द्वारा पूरा किया गया। शोध पर्यवेक्षक पी0 मुरली धराडु रहे।

2.5 पंजाब में ग्रामीण राजकीय पुस्तकालय नेटवर्क : शोधार्थी जगतार सिंह ने "Rural public library network in Punjab a study 1947 to 1980'' (Panjab University, 1984) विषय पर श्री जगदीश एस0 शर्मा के पर्यवेक्षण में अध्ययन किया।

2.6 उत्तर प्रदेश में पुस्तकालय : 2014 में शोधार्थी ज्योति मिश्रा ने "A Study of

Conservation and Preservation Techniques followed in the Libraries of Uttar Pradesh'' विषय पर प्रो0 एन0आर0 सत्यनारायण के पर्यवेक्षण में अध्ययन किया।

2.7 गुजरात विश्वविद्यलयों में पुस्तकालय : 2013 में एक अध्ययन "Automation in university libraries of Gujarat state An empirical study'' विषय पर हुआ, जो कि शोधकर्ता नरेन्द्र कुमार शर्मा ने प्रो0 मयंक जे0 त्रिवेदी के पर्यवेक्षण में सिंघानिया विश्वविद्यालय से पूरा किया।

2.8 मध्य प्रदेश में पुस्तकालय अधिनियम : 1998 में एक अध्ययन ''भारतीय राज्यों के पुस्तकालय अधिनियम का अध्ययन : मध्य प्रदेश में पुस्तकालय अधिनियम की अनिवार्यता एवं भविष्य'' विषय पर हुआ जिसे शोधार्थी राम कीर्तन तिवारी ने ब्रिजेश तिवारी के पर्यवेक्षण में गुरू घासीदास विश्वविद्यालय से पूरा किया। अध्ययन 1998 में पूरा हुआ।

2.9 डिब्रूगढ़ में महाविद्यालय पुस्तकालय का प्रभाव : 2016 में शोधार्थी सदानंद नाथ द्वारा "College library effectiveness study with special reference to the tinsukia and dibrugarh district" विषय पर किया गया, जोकि नरेन्द्र नाथ शर्मा के पर्यवेक्षण में गोवाहाटी विश्वविद्यालय से पूरा किया गया।

2.10 आंध्र प्रदेश में ग्रामीण पुस्तकालय : 2007 में एक अध्ययन "Design and development of multi type rural public library system in Andhra Pradesh India a case study" विषय पर हुआ, जिसे शोधार्थी वाई0 वेंकटेशवरलु ने पी0 कामइया के पर्यवेक्षण में श्री कृष्णदेवाराय विश्वविद्यालय से पूरा किया।

2.11 गुवाहाटीः शहरी समुदाय और पुस्तकालय : शोधकर्ता उत्पल शर्मा द्वारा 2011 में एक अध्ययन किया गया, जिसका विषय, ''Information needs and information seeking behaviour of urban community and its satisfaction by the public library system'' था, जो अलका बुरागोहाइन के पर्यवेक्षण में गुवाहाटी विश्वद्यिालय से 2011 में पूरा किया गया।

2.12 तमिलनाडु में पुस्तकालय : 2010 में एक अध्ययन "Liaison in college libraries with special reference to aided colleges in Tamilnadu: a survey and recommendations" विषय पर हुआ, जिसे शोधार्थी जे0 मनालन ने रानी बी0एस0 स्वरूप के पर्यवेक्षण में भारतदसन विश्वविद्यालय से पूरा किया।

2.13 अहमद नगर में पुस्तकालय की भागीदारी : 2013 में एक अध्ययन

"Performance evaluation and social cultural contribution of public libraries in south region Ahmednagar district (M.S.)" विषय पर हुआ, जिसे शोधार्थी राजकुमार घुले ने विक्रम उत्तमराव के पर्यवेक्षण में श्रीजगदीशप्रसाद झबरमाल तिबरवाला विश्वविद्यालय से पूरा किया।

2.14 असम में पुस्तकालय द्वारा ग्रामीण विकास : – 2015 में एक अध्ययन

"Prospects of coordinating sarba siksha abhijan and rural libraries for social development in Assam with special reference to kamrup district" विषय पर हुआ, जिसे शोधार्थी प्रशांत कुमार ने नरेन्द्रनाथ शर्मा के पर्यवेक्षण में गोवाहाटी विश्वविद्यालय से पूरा किया।

2.15 ग्रामीण विकास के लिए सूचना व्यवस्था : शोधकर्ता के0ए0 राजू द्वारा 1999 में एक अध्ययन किया गया, जिसका विषय, ''Rural development information network RDIN a model integrated information system for the development community'' था, जो सी0आर0 करिसीडप्पा के पर्यवेक्षण में कर्नाटक विश्वद्यिालय से पूरा किया गया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण विकास के लिए क्षेत्र में सूचना सेवाओं के लिए एक आपसी भावना की आवश्यकता है। 90 संस्थानों से प्रश्नावली भरवाकर अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि 55 संस्थान ऐसे हैं जिनके पास बीस हजार से कम पुस्तकें उपलब्ध हैं। 21 संस्थानों का बजट एक लाख से कम है।

2.16 ग्रामीण विकास में महिलाएं : शोधार्थी मोली जोसेफ द्वारा 1994 में एक अध्ययन किया गया, जिसका विषय, ''The level of women participation In rural development; a comparative study of governmental and non governmental organisations in kerala'' था, जो टी0 मेरी जोसेफ के पर्यवेक्षण में विज्ञान एंव तकनीकी कोचिन विश्वविद्यालय से पूरा किया गया।

2.17 शिक्षा का महत्व : लेखक तुषास के0 सिन्हा ने अपनी पुस्तक "Education for Rural Development" में बताया कि ग्रामण विकास में शिक्षा कितना महत्व रखती है। 2009 में Authorspress, Jawahar Park, Laxmi Nagar, New Delhi द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में विकास में शिक्षा के योगदान को बताया गया है।

2.18 समुचित ग्रामीण विकास : लेखक डी0 पी0 नायर ने अपनी पुस्तक "Education for Rural Development" में बताया कि ग्रामण विकास में शिक्षा कितना महत्व रखती है। 2009 में शिप्रा प्रकाशन, पटपड़गंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में बताया गया विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है।

2.21 उ0प्र0 के समाज कल्याण विभाग की छात्रवृत्ति योजनाएं : उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग द्वारा निर्धन एवं निर्बल छात्रों के लिए आर्थिक सहायता के लिए योजनाएं संचालित की जाती है। इससे ऐसे छात्र (छात्र–छात्राएं दोनों) जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और अपने पाठ्यक्रम की फीस नही भर सकते हैं, उनके लिए सरकार आर्थिक सहायता कर फीस की पूर्ति करती है।

तृतीय अध्याय : महाविद्यालयों एवं उनके पुस्तकालयों का अवलोकन (Overview of Colleges and its Libraries)

3.1 पुस्तकालय की पृष्ठभूमि : शोधकर्ता द्वारा जिन पांच महाविद्यालयों का चयन किया उनमें कुछ का इतिहास काफी पुराना है।

3.2 शैक्षणिक पुस्तकालय : शैक्षणिक पुस्तकालय वे होते हैं, जोकि शिक्षा से अथवा पाठ्यक्रम से संबंधित होते हैं। इन पुस्तकालयों में केवल पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें एवं जर्नल, पत्र–पत्रिकाएं आदि पठन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

3.3 जनता महाविद्यालय, इटावा : जनता महाविद्यालय, इटावा जिले का बहुत पुराना महाविद्यालय है। यहां लगभग 2200 छात्राएं अध्ययनरत हैं। 1959 में पुस्तकालय का निर्माण हुआ था। पुस्तकालय में 7 सदस्यों का स्टाफ है।

3.4 कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा : इसका निर्माण 1959 में हुआ था। यहां लगभग 7000 से अधिक छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे है। पुस्तकालय में यहां 6 सेक्शन हैं।

3.5 पंचायत राज राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा : इसकी स्थापना वर्ष 1991 में की गई थी। यह जनपद में एकमात्र राजकीय महाविद्यालय है जो सिर्फ छात्राओं के लिए है। यहां लगभग 1500 छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। पुस्तकालय में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है।

3.6 ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय, इटावा : इसकी स्थापना 2012 मे की गई थी। यहां लगभग 2000 से अधिक छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। पुस्तकालय में अभी पुस्तकों की संख्या और उसका संचालन ठीक नहीं है और स्टाफ भी दो हैं।

3.7चौधरी चरण सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हेंवरा इटावा : यह 1983 मे मुलायम सिंह यादव द्वारा स्थापित किया गया था। इस महाविद्यालय मे लगभग 8000 से अधिक छात्र छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। पुस्तकालय में 5 सेक्शन हैं, जो कि इनफोरमेशन सेक्शन,टेक्नीकल सेक्शन,सर्कुलेशन सेक्शन,रेफरेंस सेक्शन,जनरल सेक्शन हैं।

चतुर्थ अध्याय : आंकड़ों का विश्लेषण (Alalysis of Data)

4.1 प्रस्तावना (Preface) : शोध छात्रा ने पद्धति को निर्धारित करने के बाद आंकड़ों का संकलन किया तथा आंकड़ों का विभाजन किया।

4.2 आंकड़ों के विश्लेषण व व्याख्या का महत्वः अध्ययन में शोध छात्रा ने यह भी विश्लेषण किया है कि पुस्तकालय किस प्रकार से छात्राओं के विकास में भूमिका निभा रहे हैं एवं पुस्तकालय का प्रभाव उन ग्रामीण छात्राओं पर क्या पड़ रहा है।

4.3 विश्लेषण करने के लिए आंकड़ों का बंटवारा

अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित करने के लिए तीन भागों में बांटा गया है, जो इस प्रकार हैं –

1. कुल न्यादर्शों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण।
2. कुल स्नातक की ग्रामीण छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण।

3. कुल स्नातकोत्तर की ग्रामीण छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण।

उरोक्त तीनों भागों में विशिष्टता होने पर न्यादर्श की ग्रामीण उच्च शिक्षा, कॅरियर और ग्रामीण शैक्षिक विकास के बारे में भी विश्लेषण किया गया है।

4.4 आंकड़ों का सारणीयन (Tabulation of Data)

प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा द्वारा सूचनादाताओं और उनसे प्राप्त सूचनाओं को क्रमबद्ध करके एक सूची में तैयार किया।

इससे प्रत्येक छात्रा के द्वारा दिए गए उत्तरों को एक साथ संकलित करना आसान हो गया। शोध छात्रा ने स्नातकोत्तर व स्नातक छात्राओं द्वारा दी गई सूचनाओं को पृथक किया।

4.5 आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन और विश्लेषण :

शोध छात्रा द्वारा तैयार की गई प्रश्नावली के माध्यम से जो सूचनाएं प्राप्त हुईं, उनका चित्रमय प्रदर्शन और व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया। शोध छात्रा द्वारा विश्लेषण करने पर पता चलता है कि 77 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं पुस्तकें प्राप्त हो जाती हैं। 61.5 प्रतिशत को सहयोग मिलता है। इसी प्रकार 62.2 प्रतिशत को उनकी भाषा में अध्ययन सामग्री मिल जाती हैं। हालांकि पाठ्यक्रम से अलग बहुत सी छात्राएं अध्ययन नहीं करती। 74 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि उनके पुस्तकालय में बैठने की व्यवस्था है। 60.5 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि घर के कामों की वहज से अध्ययन में परेशानी आती है। जबकि 22.5 प्रतिशत का कहना है कि पुस्तकालय में अध्ययन करने में परेशानी नहीं आती। 71 प्रतिशत छात्राओं को घर में अध्ययन सामग्री याद होती है। छात्राएं डिग्री प्राप्त होने के बाद भी पुस्तकालय का उपयोग करना चाहती हैं। क्योंकि वे पुस्तकालय को लाभदायक मानती हैं। और वे अन्य छात्राओं को भी प्रेरित करती हैं। 52 प्रतिशत छात्राएं ऑटो या बस से पुस्तकालय अथवा महाविद्यालय आती हैं। अधितकतर छात्राएं पुस्तकालय में लगभग एक घंटा समय व्यतीत करती हैं। 90 प्रतिशत सामग्री शैक्षिक पाठ्यक्रम संबंधी पढ़ी जाती है। स्वाध्याय के लिए छात्राओं को घर पर पढ़ना अधिक पसंद है। छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए उनके शिक्षक प्रेरित करते हैं। पुस्तकालय जाने से अन्य पठन सामग्री पढ़ने

की इच्छा भी जागृत हुई। पुस्तकालय में छात्राओं को पुस्तकालय की पुस्तकों की संख्या एवं उनका रख रखाव सर्वाधित पसंद है।

4.6 ग्रामीण स्नातकोत्तर एवं स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का पृथक चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण :– शोध छात्रा द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं से प्राप्त आंकड़ों का अलग अलग विश्लेषण एवं चित्रमय प्रदर्शन किया गया।

4.7 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण :– ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं से प्राप्त आंकड़ों का अलग से विश्लेषण किया गया। इसमें प्राप्त होने वाली जानकारी अलग है। पृथक विश्लेषण से स्नातकोत्तर छात्राओं का विचार प्रस्तुत होता है।

4.8 ग्रामीण स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन और विश्लेषण :–

ग्रामीण स्नातक छात्राओं से प्राप्त आंकड़ों का अलग से विश्लेषण किया गया। इसमें प्राप्त होने वाली स्नातकोत्तर छात्राओं से प्राप्त जानकारी से अलग है। पृथक विश्लेषण करने से अलग विचार प्रस्तुत होता है।

4.9 साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण

शोध छात्रा ने महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्षों से भी आंकड़ों का संकलन किया। प्रस्तुत अध्ययन में 5 चयनित महाविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों से साक्षात्कार किया गया। उनसे प्रश्नों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया। पुस्तकालयाध्यक्षों से हुए साक्षात्कार में पता चला कि तीन पुस्तकालयों के खुलने का समय सुबह 9 बजे से है, जबकि अन्य दो पुस्तकालयों का समय सुबह 10 बजे से है। कुछ पुस्तकालयों में कर्मचारियों की स्थिति संतोषजनक है, परंतु कुछ में स्थिति अच्छी नहीं है। जनता कॉलेज में छियालीस हजार पुस्तकें हैं। कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय में चालीस हजार से अधिक पुस्तकें हैं। पंचायतराज राजकीय महाविद्यालय में लगभग सात हजार पुस्तकें है।

कर्मक्षेत्र महाविद्यालय के पुस्तकालय में 6 सेक्शन हैं। जनता महाविद्यालय के पुस्तकालय में 4 सेक्शन हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि पुस्तकालय में आने वाली छात्रा ग्रामीण परिवेश की है या नहीं इसका पता लगाना मुश्किल होता है। लेकिन छात्राओं को सुझावों को हम महत्व देते हैं और कोशिश करते हैं कि जो पुस्तकों की आवश्यकता है, उन्हें पूरा किया जा सके।

पंचम अध्याय : निष्कर्ष (Conclusion)

5.1 प्रस्तावना

निष्कर्ष में शोधकर्ता अपनी समस्या से जुड़े सभी प्रश्नों के संबंध में मिले प्रश्नों के हल बताता है और जानकारी देता है कि उसकी समस्या का हल उसे मिला या नहीं।

5.2 उद्देश्य की पूर्ति

अध्ययन के दौरान प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिसमें उद्देश्यों की पूर्ति हुई। इनका विवरण इस प्रकार है –

1– अध्ययन में शोधार्थी का पहला उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय से एकत्रित किए जाने वाली शैक्षिक सामग्री का अध्ययन' था। चित्र संख्या 2, 3, 4, 5, 6, 18, 19 और 20 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से शोधार्थी के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति होती है।

2– अध्ययन में शोधार्थी का दूसरा उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय उपयोग करने वाले समय का पता लगाना' था। चित्र संख्या 3, 4, 16, 17, 18 और 20 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है।

3– अध्ययन में शोधार्थी का तीसरा उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालयों में कुल समय व्यतीत करने का अध्ययन' था। चित्र संख्या 17 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है।

4– अध्ययन में शोधार्थी का चौथा उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय तक पहुंचने वाले यातायात संसाधनों का अध्ययन' था। चित्र संख्या 16 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है।

5.3 परिकल्पनाओं का परिक्षण –

शोध छात्रा ने समस्या का हल ढूंढने के लिए कुछ परिकल्पनाओं का निर्धारण किया था। अध्ययन के दौरान प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण कु अनुसार परिकल्पनाओं की जांच की गई कि वे सिद्ध हुए या नहीं। परिकल्पनाओं की जांच निम्मलिखित है–

1– अध्ययन में शोध छात्रा की पहली परिकल्पना, '' ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली छात्राएं के शैक्षिक विकास में पुस्तकालय की भूमिका है।'' थी। विश्लेषण संख्या 4.5.1, 4.5.2, 4.5.3, 4. 5.4, 4.5.5, 4.5.6, 4.5.7, 4.5.8, 4.5.16, 4.5.17, 4.5.18, 4.5.19, 4.5.20 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

2– अध्ययन में शोध छात्रा की दूसरी परिकल्पना, ''पुस्तकालय, छात्राओं की अकादमिक शिक्षा को प्रभावित कर रहा है।'' थी। विश्लेष्ण संख्या 4.5.3, 4.5.4, 4.5.5, 4.5.7, 4.5.10, 4.5.13, 4.5.14, 4.5.15, 4.5.18, 4.5.21 4.5.23 4.5.24_में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से यह परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

3– अध्ययन में शोध छात्रा की तीसरी परिकल्पना, '' ग्रामीण स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं पर पुस्तकालय का समान प्रभाव पड़ रहा है।'' विश्लेषण संख्या 4.7.6 एवं 4.8.6 में किए गए विश्लेषण में यह परिकल्पना असफल सिद्ध होती है।

5.4 निष्कर्ष

प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा अपनी अध्ययन के निष्कर्ष पर पहुंची है, जो इस प्रकार है –

शहरी क्षेत्र के अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राएं कम हैं जो महाविद्यालयों में जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली छात्राओं की संख्या शहरी के अपेक्षा कम है, लेकिन फिर भी आंकड़ों पर ध्यान दें तो पता चलता है कि छात्राएं दूर दराज स्थित महाविद्यालयों में जाती हैं और अध्ययन करती हैं। शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली छात्राओं पर पुस्तकालय का सीधा प्रभाव पड़ रहा है। छात्राओं ने यह माना कि पुस्तकालय

महत्वपूर्ण है और पुस्तकालय का लाभ उन्हें मिल रहा है। छात्राएं पुस्तकालय में जाकर पढ़ रही हैं, पुस्तकें प्राप्त कर रही हैं। पुस्तकालय ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक विकास में योगदान दे रहा है या नहीं। चित्र संख्या 2, 3, 4, 8, 13, 14, 15 और 20 के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि पुस्तकालय ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक विकास में योगदान दे रहा है। चित्र संख्या 3, 7, 23 के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राएं महाविद्यालयों में आकर और पुस्तकालय का उपयोग कर उनकी झिझक समाप्त हो रही है। पुस्तकालय के कर्मचारी उनकी मदद करते हैं इससे ग्रामीण छात्राएं सहज महसूस करती हैं और उनकी झिझक खत्म होती है। यह उनके शैक्षिक विकास में भी लाभप्रद है। अध्ययन में चित्र संख्या 16 के आंकड़ों का विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राओं के पास अच्छे संसाधन नहीं है फिर भी छात्राएं पुस्तकालय आती हैं। ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकालय केवल महाविद्यालयों में ही उपयोग करने को मिलता है। इसके बावजूद ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग भी कर रही हैं और यह मानती है आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि अन्य महाविद्यालयों के अपेक्षा एडेड महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति निजी महाविद्यालयों के पुस्तकालय से ज्यादा अच्छी है।

पंचायतराज महाविद्यालय के पुस्तकालय और ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय से छात्राएं अधिक अपेक्षा नहीं रखतीं। यहां पुस्तकें बहुत कम हैं और यहां के रखरखाव भी संतुष्टिपूर्ण नहीं है। कई बार पुस्तकालय बंद रहता है, जिसकी वजह से छात्राओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। एडेड महाविद्यालयों की छात्राएं निजी महाविद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं से बेहतर हैं। विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि ग्रामीण क्षेत्र की स्नातक छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की स्नातकोत्तर छात्राएं अधिक स्वाध्याय के लिए घर पर पढ़ती हैं।

5.5 समस्याएं एवं बाधाएं–

जब आंकड़ों के संकलन के समय, कहीं साक्षात्कार के लिए जाते समय यात्रा में, अध्ययन क्षेत्र में अवलोकन करते समय, न्यादर्शों की तरफ से उपेक्षा आदि कई तरह से बाधाएं आती हैं, जिससे शोधकर्ता को जूझना पड़ता था।

5.6 सुझाव

1. पुस्तकालय में सभी पाठ्यक्रम से से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए।
2. पुस्तकालयों में कम्प्यूटर की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि छात्राओं को पुस्तकें ढूंढने में अधिक समय व्यतीत न करन पड़े।
3. पुस्तकालय में बैठने एवं पढ़ने की साफ–सुधरी व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि ग्रामीण छात्राओं का पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की और अधिक इच्छा जागृत हो सके।
4. पुस्तकालयों खुलने का समय महाविद्यालयों के समय सारिणी के अनुसार न होकर छात्राओं के हित के अनुसार होना चाहिए।
5. ग्रामीण पुस्तकालयों में महिला कर्मचारी भी होनी चाहिए, ताकि ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय आने में झिझक महसूस न करें।
6. ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण छात्राओं के विकास हेतु विशेष महिला पुस्तकालय होना चाहिए, जहां सिर्फ महिलाएं पढ़ सकें। इससे उनके परिवार वालों को भी पुस्तकालय भेजने में आपत्ति नहीं होगी और महिलाओं को अध्ययन में आसानी होगी।